व्दितीय अध्याय–

"गली आगे मुडती है में चित्रित समस्याऐं

1. धार्मिक आडंबर की समस्या।
2. विश्वविद्यालयों में स्थित भ्रष्टाचार की समस्या।
3. बेरोजगारी की समस्या।
4. गुंडई की समस्या
5. बाढ की समस्या।
6. भाषा आंदोलन की समस्या।
7. पुलिस भ्रष्टाचार की समस्या।
8. ग्राहकों को ठगाने की समस्या।
9. अश्लीलता की समस्या ।
10. आतंकवाद की समस्या।
11. जातीयवाद की समस्या।

अध्याय दूसरा

"गली आगे मुड़ती है" में चित्रित समस्याएँ

आज के युग की हर रचना समाज जीवन से अत्यंतिक गहराई से जुडी हुओ है। इन रचनाओं में आज के समाज की समस्याओं का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। "विकसित समाजजीवन के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं का निर्माण होता है। ये समस्याएँ मानवी जीवन के विकास में बाधाएँ पहुंचाती हैं। आज की विषम समाज व्यवस्था ने व्यक्ति और समाज के स्नेहील संबंधों मे तनाव उत्पन्न किया है। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच के मधुर संबंध लुप्त होने लगे हैं। सामंतवादी समाजव्यवस्थापर होनेवालें पूंजीवादी आक्रमण के कारण सामान्य जनता की रीढ टूटने लगी है। अंग्रेजों के आगमन से आये नये विचारों और नयी संस्कृति के प्रभाव ने भारतीय समाज व्यवस्था को झकझोर दिया है। अंग्रेजों की शोषण की नीति ने भारत की संपूर्ण शक्ति को तहस-नहस कर डाला। एक तरफ से नये विचार, नई शिक्षा से उत्तेजित मस्तिष्क तो दूसरी तरफ उत्तेजना को खल करनेवाली गुलामी की बेडियाँ। एक स्थिति में अपने अधिकारों और हक्कों की आवश्यकता मानवी जीवन में महसूस करके नई समाज रचना के सपने देखने का प्रयत्न मनुष्य करने लगा फलतः धार्मिक स्तरपर सांप्रदायिकता की, सामाजिक स्तर पर नारी संबंधी समस्याओं की निर्मिति हुओ। इन समस्याओं के साथ-साथ व्यक्ति और समाज के पारस्पारिक संबंधों की समस्याएँ, सांस्कृतिक मूल्यों के गिरावट संबंधी समस्याएँ, वर्ग-संघर्ष की समस्याएँ, भ्रष्टाचार की समस्याएँ, आंदोलन की समस्याएँ आदि समस्याओं का निर्माण होता रहा।" 1

साठोतरी कालखंड में लिखे गये उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के बहुआयामी रुप देखने को मिलते हैं। इन उपन्यासों में चित्रित समस्याओं में सामाजिक यथार्थ के प्रति जागरुकता लक्षित होती हैं। शिवप्रसाद सिंह का "गली आगे मुड़ती हैं" उपन्यास भी इसका अपवाद नहीं है। इस उपन्यास में शिवप्रसादजीने छात्र आंदोलन की मुख्य समस्या के साथ-साथ धार्मिक आडम्बर की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, बेकारी की समस्या, गुण्डई की समस्या, बाढ की समस्या, हिंदी-भाषा आंदोलन की समस्या, ठगाने की समस्या, आतंकवाद की समस्या, जातीयवाद की समस्या, अश्लिलता की समस्या आदि समस्याओं पर गहराई से चिंतन किया है। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में हम इन समस्याओं पर सोचेंगे।

(1) <u>धार्मिक आडम्बर की समस्या</u> :

भारत में धार्मिक समस्याओं ने ऐसा रुप गृहण किया है, जो श्रध्दा और अंध:श्रध्दा के अवरण में सुरक्षित रहकर सदियों से भारतीय जनमानस को ग्रस्त करते आ रहा है। आज धार्मिक परंपराओं में परिवर्तन तो अवश्य देखनेको मिलते हैं, परंतु मानवी जीवनपर हावी हुए धार्मिक संस्कार पूर्ण रुप से समाप्त नहीं हो पाये हैं। इन संस्कारों के परिवर्तन के लिए कअी सदियों का इंतजार करना अनिवार्य है। आज भी समाज में धार्मिक मूल्य दृढ बुनियाद पर स्थित हैं। समाज और धर्म दूध और पानी जैसे एकदूसरे में घुलमिल गये हैं – और एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं। धर्म के नामपर धार्मिक आडम्बर के माध्यम से लोगों को लूटा जा रहा है। धर्म के नाम पर, जातीयता के नामपर, संप्रदाय के नामपर भारत में बडे--बडे संघर्ष हो रहे हैं। मंदिरों-मस्जिदों में आडंबर वादी पंडीत और मुल्ला मौलवी पनपने लगे हैं। धार्मिक तिर्थस्थान व्यापारीक केंद्र बनने लगे हैं। चारों तरफ धार्मिक आडम्बर का बोलबाला शुरु है। "गली आगे मुड़ती है" में शिवप्रसाद सिंहजी ने इस समस्यापर चिंतन किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में रामकीरत पुजारी के माध्यम से शिवप्रसादजीने इस बात को चित्रित किया है। आज अपना उल्लू सीधा करने के लिए भगवान का व्यापार शुरु हो गया है। मठ में रहनेवालों से किराया वसूल किया जा रहा है। अगर समयपर किराया नहीं मिला तो उन्हें बाहर निकालकर उनके सामान रास्ते पर फेंके जा रहे हैं। देंबू, रमेंद्र ने रामकीरत को दक्षिणा देने का लालच दिखाने पर वह फाटक खोलता हें। इसपर देवेंद्र की प्रतिक्रिया देखिए - "अरे महाराज हम लोग यहाँ ठाकुरजी का दरशन करने आये और आप फाटक बंद करके बैठ गये। आज टेम्पो हाई हैं, महाराज हमारे बबुआ रमेंद्र तिवारी फर्स्ट क्लास पास हुए हैं, ई आपके मंदिर पर दक्षिणा चढायेंगे।" 2 इसे सुनते ही वह फाटक खोल देता है। हिंदुओं के धर्म में बहुत सारी बातें अच्छी हैं. मगर इन पंडितों, पुजारियों पुरोहितों आदि के स्वार्थ के कारण धर्म के नामपर लोगों के मन मे आशंकाएँ पैदा होने लगी हैं। रामकीरत धम के नामपर चले बुरे कुकर्मोपंर पर्दा डाल रहा हे। वह किसी और के साथ अनैतिक संबंध रखता है। इसके बारे में रामानंद की प्रतिक्रया देखिए - "---- जब वह आयी थी. अपने सौहर के साथ आयी भी जब ऊ टूटकर दाने-दाने को मुहताज होकर खिशा खींचता खून फेंककर टी बी. से भरा तब तूने दया क्यों नहीं दिखाई? तभी तू उंसे गली से उठाकर मंदिर में पधारता तो एक गरीब इंसान मौत के मुँह में जाने से बच जाता। जब ऊ मर गया तब तेरी दया का समुद्र उमड़ा। उसको उठाकर अपने मंदिर से झाडू-बहारु के लिए आया और धीरे-धीरे वह आज यहाँ कि पुजारिन बन गई है। हे धर्मराज, मैं तेरे सब करतब जानता हूँ समझा----" 3 इन लोगों ने धर्म तथा देवो देवता आदि को कलंकित किया है। इसके साथ ये लोग गाँव के आर्थिक और औद्योगिक जीवन में बाधा

डालने और शासन संबंधी सुव्यवस्था छिन्न-भिन्न करने में भी किसी प्रकार का संकोच नहीं करते हैं। वे जादूटोने अथवा मनुष्यों की खोपड़ी में रखे उल्लू, चमगादड़, सर्पो और नरमांस आदि के व्दारा उनपर सहजही आतंक जमा लेते हैं।

अंत में हम कह सकते हैं कि, धर्म का पवित्र अर्थ मिटता जा रहा है और धर्म नया रुप ग्रहण कर रहा है। राजनीति अपने स्वार्थ के लिए मंदिर और मस्जिद को अपनी विरासत मानकर लड रहे हैं। इसका अच्छा उदाहरण "बाबरी मस्जिद' हो सकता हैं। राम-रहीम, मंदिर-मस्जिद के नामपर झगडे शुरु हो रहे हैं। जिस धर्म ने हमें शांति का सन्देश दिया हैं, उसी के नाम पर हिंसा का रुप देखने को मिलता है। इसी समस्या का शिवप्रसादजीने वास्तविकता के रुप में सही ढंग से चित्रिण किया है। गांधीद्वारा भी धर्म को अपनाया गया लेकिन उन्होंने अंधःश्रध्दा को प्रश्रय नहीं दिया। वे वेद, उपनिषद, अवतारवाद में भी विश्वास रखते थे। वे गीता का आदर्श रखनेवाले नेता थे। आज मात्र धर्म फसादका कारण, लूटने की विद्या बन चुका है।

<u>निष्कर्ष</u> :

प्रस्तुत उपन्यास मं चित्रित "धार्मिक आडंबर की समस्या" पर सोचने के बाद यह स्पष्ट होता हैं कि, आज धर्म के नामपर मुल्ला-मौलवी, पंडित-पुरोहित अंधश्रध्द लोगों को लूटने का काम करने लगे हैं। लोगों की धार्मिक अंधःश्रध्दा को देखकर उन्हें अधिकाधिक मात्रा में फंसाने का काम कर रहे हें। आज के मंदिर-मस्जिद आत्मकेंद्रितता के अड्डे बनने लगे हैं। मंदिर के, मस्जिद के नामपर करोडों रुपयों की धनराशि इकट्टा की जाने लगी है। कओ धार्मिक प्रतिष्ठानों की बुनियाद डाली जाने लगी है। इन प्रतिष्ठानों में भी भ्रष्टाचार का सिलसिला जारी है। मंदिर के परिवेश का व्यापारीकरण हो चुका है। वहाँ धार्मिक पवित्र्य की अपेक्षा व्यापारिक लूट पनपने लगी हैं। मंदिर-मस्जिद अनीति, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, धोखेबाजी, लूट-खचोट के अड्डे बनने लगे हैं। शिवप्रसादजीने इस समस्या का अंकन इस उपन्यास में करके काशी जैसे सांस्कृतिक महत्व रखनेवाले शहर में धर्म के नामपर चलनेवाले कुकर्म को प्रस्तुत किया है। आजकी काशी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को उजागर करने के लिए यह समस्या अधिक उचित बन बैठी है।

(2) **<u>विश्वविद्यालयों में स्थित भ्रष्टाचार की समस्या</u>** :

आज देश के सभी माहोलों में भ्रष्टाचार का जोरदार सिलसिला जारी है। शिक्षा क्षेत्र तथा विश्वविद्यालयीन परिवेश इस समस्या से नहीं बच सका है। आज विश्वविद्यालयों में अनुपयोगी शिक्षा पध्दति, पुराने ढर्रे की पाठयक्रम की रचना, विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के प्रबंधकों

की तानाशाही आदि से आज का छात्र संत्रस्त है। आज का छात्र उच्चस्तरीय शिक्षा पध्दति में अनेक कमियाँ महसूस करता जा रहा है। अध्यापकों की कमीने, पुस्तकों की कमीने, छात्रों के अयोग्य हरकतोंने इस क्षेत्र में अराजकता फैली है। आज राजनीतिक भ्रष्ट हरकतों के कारण नये-नये विनाअनुदानित महाविद्यालय खोले जा रहे हैं, परंतु इस व्यवस्था में होनेवाले भ्रष्टाचार को न्हीं रोका जा रहा है। फीस बढाई जा रहीं है, परचे जाँचते समय घुसखोरी हो रही है, प्रश्नपत्र नियत समय के पहले अवैध मार्ग से छात्रों के हाथ आ रहे हैं। रिश्वत के बलपर किसी के अंकों को बढाने का कार्य हो रहा है। इस भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानेवालों की आवाज दबाई जा रही है। कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों में प्रवेश प्राप्ति के लिए बडी धनराशि देनी पड़ती हैं। प्रमाणपत्रों का बजार शुरु हैं, विश्वविद्यालयों में भरती हुए बडे-बडे अमीरों के बेटे-बेटियाँ पैसों के दबाव से सभी विश्वविद्यालयीन सुविधाएँ भोग रहे हैं। आज विश्वविद्यालय संक्रमण काल से गुजर रहे हैं। शिक्षा के प्रचार और प्रसार ने गलत दिशा पकडी है और पूरा विश्वविद्यालयीन माहोल भ्रष्टाचार से भीग उठा है। शिवप्रसाद सिंहजी ने "गली आगे मुड़ती हैं" में इस समस्या को बडी कुशलता के साथ चित्रांकित किया है।

"गली आगे मुड़ती है" में शिवप्रसाद सिंहजी ने विश्वविद्यालयों में स्थित भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालते हुऐ कहा है - प्रोफेसर एक-दूसरे को नीचे दिखाने के लिए छात्रों के अंक बढाते हैं। सुबोध भट्टाचार्य जैसे प्राफेसर ऐसे कुकर्म के लिए तैयार न होनेपर उन्हें धमकाया जाता है। अध्यापन से राजनीतिक संबंधन जोडनेवाले सुबोध भट्टाचार्य के छात्र रामानंद को स्कॉलरशीप से हाथ धोना पड़ता हैं, उसका क्रमांक नीचे चला जाता है। इससे रामानंद की गति कुंठित होकर उसे अपनी तमन्ना से हाथ धोना पड़ता हैं। विश्वविद्यालयीन उपाधियों की प्राप्ति में पैसों की नापतौल होने लगती है। प्राध्यापकों को होटल में ऊँचा खाना देनेवाले छात्रों को उपधियाँ प्राप्ती मे कठिनाईयाँ नहीं आ पाती, उन्हें ढेर सारी उपलब्धियाँ जल्द-ही-जल्द मिलती हैं। प्रोफेसर सुबोध भट्टाचार्य विश्वविद्यालयीन भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं - "यह वह तिलस्मी खोह हैं जयंती, जहाँ काला सफेद और सफेद काला बनकर निकलता है। जानती हो यह सामने बैठा लडका पिछले वर्ष सर्वोच्य स्थान पाये था, इसे निश्चित यू. जी. सी. की स्कॉलरशिप मिलती, पर इस वर्ष यह तीसरी पोजिशन पर है। दो लडके इसके सिर पर बिठा दिये गये हैं, जो इससे साहित्य पढ़ते रहे हैं।"4

विश्वविद्यालयों में अपने नीजी स्वार्थ के लिए सच को झूठा और झूठ को सच बनाया जाता है। जिनका राजनीति से या इन भ्रष्टाचारियों से अच्छा सलुक रहता है, वे सभी क्षेत्र में सम्मान प्रप्त कर सकते हैं। प्रोफेसर सुबोध भट्टाचार्य किसी भी राजनेता से संबंध नहीं रखते थे, इसीकारणवश उनके छात्र रामानंद को छात्रप्रवृत्ति प्राप्त हो नहीं सकी। उसे जानबुझकर नीचे दबा दिया गया।

विश्वविद्यालयीन प्राध्यापकों की दलबंदी या गुटबंदी पर प्रकाश डालते हुए प्रोफेसर भट्टाचार्य कहते हैं- "ऐसा इसलिए हैं कि, न चाहते हुए भी यह मान लिया गया है कि, यह लडका सुबोध की पर्टी में है। यानी सुबोध की कोई अस्तित्पहीन पार्टी है, जिसका यह नेता है। और सुबोध भट्टाचार्य को सबक सिखाने के लिए इसकी हत्या कर दी गयी हैं।"5 यह लोग यह नहीं सोचते कि, अपने राजनीतिक भ्रष्टाचार की ओरसे रामानंद जैसे प्रतिभावान छात्रों को मिटा रहे हैं। परचे जाँचनेवाले ऐसा अपवित्र काम करके शिक्षा क्षेत्र को भ्रष्ट और बदनाम बना देते हैं। विश्वविद्यालयीन नियुक्ति के समय, प्रवेश देते समय भ्रष्टाचार का गंदा सिलसिला चलता रहता है। इसे तुरंत बंद करने के लिए कडे नियम और उपाधियों की प्राप्ति में भी सही जाँच पडताल अनिवार्य है।

डॉ. अकिंचन के मतानुसार - "आज जमींदार और नवपूंजीपति वर्गों से आये हुए छात्रों का उद्येश्य उपाधियाँ प्राप्ति तक ही सीमित रहा है। छात्र अपना बाजारु मूल्य बढाने, दफ्तर शाहों की सूची में अपना नाम दर्ज कर पाने की धून में लगे हैं"।6 अकिंचनजी के ये विचार इस भ्रष्टाचार और अनीति पर प्रकाश डालने में सक्षम हैं।

<u>निष्कर्ष</u> :

"गली आगे मुड़ती है" में इस समस्या पर गहराई से सोचकर आज के विश्वविद्यालयों नें शैक्षिक मूल्यों की गिरावट पर गहराई से प्रकाश डाला है। आज शिक्षा क्षेत्र में उपाधियों ने बाजारु रुप धारण किया है। रिश्वत देकर उपाधियाँ खरीदी जाती हैं। नवपूंजीपति वर्गों तथा जमींदार वर्गों से आये छात्र अपना मूल्य बढाने के लिए दप्तरी बाबूओं की सहायता से भ्रष्ट नीति अपनाकर उपाधियाँ खरीदना चाहते हैं। जिन्होंने कभी कॅालेज या विश्वविद्यालय का मुंहभी देखा नहीं बल्कि केवल विश्वविद्यालय में नाम दर्ज करके उपधियाँ प्राप्त करनेवाले छात्र आज इस देश में मौजुद हैं। छात्रों में आज उच्च सामाजिक स्थितियों को प्राप्त करने की महतवाकांक्षा प्रबल रुप में बढ़ती जाने के कारण कठिण परिश्रम और त्याग की भावना से अपना अर्जित उद्देश्य प्राप्ति के लिए रिश्वत खोरी, धोखेबाजी, दूसरे को डरा-धमकाने की नीति पनपने लगी है।

छात्रों में बढती हुआी यह अप्रतिष्ठापूर्ण प्रवृत्ति को देखकर अध्यापक और प्राध्यापक वर्ग भी अपने कर्तव्य से परांगमुख होने लगे हैं। प्राध्यापकों की कर्तव्यनिष्ठता ओर सेवाभाव का समाज में और छात्र जगत में भी यथेष्ट सम्मान न होने पर ये लोग केवल तटस्थ रहकर सब तमाशा देखने का प्रयत्न करने लगे हैं। सुबोध भट्टाचार्य इसका अच्छा उदाहरण है।

हर विश्वविद्यालयीन छात्र जीवन में ऊपर उठने की लालसा रखता है. और किसी भी अवैध पध्दति का अवलंब करके वैभव की चरमसीमा को प्राप्त करना चाहता है। इसलिए विश्वविद्यालयों में और कालेजों में हिसाचार भ्रष्टाचार का दौरदौरा लगा हुआ देखने को मिलता है। हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था संस्कार वृध्दि की अपेक्षा स्वार्थ और संपत्ति के केंद्रिकरण में अधिक दिलचस्पी दिखाती हैं। यहाँ डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने शिक्षा क्षेत्र की गिरावट तथा भ्रष्टनीति पर चिंता व्यक्त की है।

(3) **बेरोजगारी की समस्या** :

विकसनशील भारत देश में औपनिवेशिक शिक्षा के विस्तार के परिणाम स्वरुप बेकारी एवं बेरोजगारी का खतरा निर्माण हो रहा है। विश्वविद्यालयों की संख्या में वृध्दि होने लगी है। शिक्षित बेरोजगार छात्रों की आबादी बढती जा रही है। स्कूलों और कालेजों मे परंपरागत गलत शिक्षा का आयोजन किया जा रहा है। पढने–लिखने जैसी सामान्य शिक्षा का प्रचलन शुरु ही रहा है। छात्रों की विशिष्ट योग्यता तथा प्रतिभा को प्रोत्साहित करनेवाली शिक्षा–व्यवसथा स्वतंत्र भारत में उपलब्ध नहीं है। विशिष्ट कार्य के लिए छात्र तैयार नहीं किये जा रहे हैं परिणामतः उपाधिप्राप्त छात्रों में बेरोजगारी बढने लगी है। "भारत मे शिक्षा के कारण भ्रदता पर जोर दिया जा रहा है जो गलत है। रुसी, अमरीकी, स्वीडीश शिक्षा पध्दति में भद्रतापर जोर न देने के कारण वहाँ बेरोजगारी अधिक मात्रा में नहीं है। इसलिए भारतीय शिक्षा के स्वरुप और अर्थ में परिवर्तन की जरुरी है।"7 आज भारत में दिन–ब–दिन बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। लाखों नौजवान रोजी–रोटी के लिए मारे–मारे घुमते रहे हैं। उनके सामने निश्चित भविष्य न होने के कारण तथा उदरपूर्ति के लिए उपलब्ध साधन न होने के कारण उनमें सरकार के प्रति निरंतर विद्रोह बढ़ता जा रहा है। इस विद्रोह जन्य निराशा के कारण आज के छात्रों में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। बेकारी से उद्‌भूत अनुशासनहीनता को मिटाने में शासन असफल बना है। पूरे राष्ट्र में यह उपद्रव बढता जा रहा है जिससे पूरा जीवन तहस–नहस हो रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में शिवप्रसाद सिंहजी ने इस समस्यापर गहराई से सोचा है।

स्वातंत्र्य प्राप्ति के दौरान जो आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन हुए जिससे छात्र प्रभावित हुए बिना नहीं रहें। इसमें छात्रों का योगदान आवश्यक था, लेकिन इसके खिलाफ विश्वविद्यालयों में मिलनेवाला प्रशिक्षण उनकी बढ़ती हुई महत्वाकांक्षओं के अनुरुप नहीं था। विश्वविद्यालयों में इस संरचना के परिवर्तन के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाये गये। छात्रों के लिए परीक्षायें आयोजित करना ओर सरकारी सेवा के लिए उन्हें प्रमाणपत्र और उपाधि दे देना, यही शिक्षा का मूल उद्देश्य रहा है। छात्रों के व्यक्तितव को समग्ररुप से विकसित करने और उनमें समन्वय, निर्णय क्षमता

आत्मबोध की शक्ति पैदा करने के दायित्व से आधुनिक शिक्षा अछूती रही है। छात्रों व्दारा पायी गयी शिक्षा और सामाजिक जीवन के बीच की खाई निरंतर बढ़ती जा रही है। प्रतिवर्ष उपाधियाँ लेनेवालों की संख्या बढ़ती गयी और बेरोजगारी और उदरपूर्ति की समस्या खडी हो गयी। इसी समस्या में घिरा हुआ युवक शिक्षण संस्थाओं के प्रति ही नहीं अपितु पूरी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करने को आमदा हुआ। इस असहाय स्थिति में सुविधा परस्त लोगों, अयोग्य और भ्रष्ट शिक्षकों तथा प्रशासकों की आँखें खोलने के लिए संघर्ष के अलावा उनके पास कोई ओर रासता भी तो नहीं रहा है।

प्रस्तुत उपन्यास में इस समस्यापर गहराई से सोचा हे। उपन्यास में चित्रित "श्रीकांत" बेरोजगारी से घिरे छात्रों का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। श्रीकान्त के माता-पिता प्रतिकूल परिस्थिति में उसे पढ़ाते हैं, मगर उसे नौकरी न मिलने के कारण वह पागल बन जाता हे। माँ-पिता अपने बेटे की इस हालत पर दुःखी होते हैं। श्रीकांत पागलपन में भी शिक्षा को गलत कहता हें, शिक्षा से स्वयं की रोटी तक पा नहीं सकता उसे दूसरों को कमाई पर पेट भरना पड़ता है। इसलिए वह शिक्षा से नफरत करता है। सस्ते क्लर्क बनानेवाली शिक्षा की परंपरागत पध्दति बहुत गलत रही है। जीवन को प्रश्रय देनेवाली तांत्रिक शिक्षा अनिवार्य है। इसके बारे में महात्मा गांधी कहते हैं - "हमारे देश के विश्वविद्यालयों में ऐसी कोई विशेषता तो होती ही नहीं। वे तो पश्चिमी विश्वविद्यालयों की एक निस्तेज निष्प्राणनकल करते हैं।8 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन आवश्यक है, छात्रों को स्वालंबी शिक्षा आवश्यक है। श्रीकांत की दुखांतिका के माध्यमसे लेखकने इस पर गहरा चिंतन किया है।

<u>निष्कर्ष</u> :

प्रस्तुत उपन्यास में शिवप्रसादजीने इस समस्या का अंकन करते हुए बेरोजगारी पर चिंता व्यक्त की है। छात्रों को पागल बनानेवाली शिक्षा पध्दति काम की नहीं हैं। छात्रों को हर क्षेत्र में स्वावलंबी बनानेवाली तांत्रिक शिक्षा पध्दति यदि विकसित न हो जाए तो बेरोजगारी से छात्र विद्रोह करने को आमदा होंगे। छात्र विद्रोह के लिए आज की शिक्षा व्यवस्था ही प्रमुख है। बेरोजगारी से छात्रोमें निराशा, मजबूरी और पागलपन भी बढने. लगता हैं। इस बात की पुष्टि उपन्यासकार ने "श्रीकान्त" नाम पात्र के माध्यम से दी हैं। आज की शिक्षा निरुपयोगी और रुग्ण है। शिक्षा क्षेत्र की भ्रष्ट नीति के कारण भी बेरोजगारी की समस्या का निर्माण हो रहा है। रामानंद तिवारी इसका अच्छा उदाहरण है जो प्रतिकूल परिस्थिति में ट्युशंस लेकर अव्वल दर्जे की शिक्षा प्राप्त करता है,

परंतु गंदी राजनीतिके कारण उसे नीचे दबाकर वशिलेबाजी से और दो छात्रों को उसके ऊपर बिठलाया जाता है। आर्थिक तंगी से आतंकित मजबूर रामानंद घर छोड भाग जाता हैं। पलायन के सिवा वह कर ही क्या सकता है। और आज शिक्षा क्षेत्र में व्यापारिक नीति का अवलंब बढ़ते जा रहा हे। जिससे यह समस्या और भी गंभीर बनने की संभावना हैं। महंगी शिक्षा हाशिल करने में नाकामयाब होकर युवक आज धंधों में पड़कर उदरपूर्ति करना चाहते हैं। भगवतीचरण वर्मा के "थके पाँव" का केशव ऐसा ही पात्र है, जो जीवन से समझौता करने के लिए उदरपूर्ति का हल तलाशने के लिए साधारण सी क्लर्की करने लगता है।

परिवर्तित समाज स्थिति, नयी अर्थनीति के कारण बेरोजगारी की समस्या भयावह रुप धारण करने लगी है। छात्रों की मानसिकता में बिगाड़ आने लगा है। राष्ट्रकार्य में लगा रहने की अपेक्षा आज का छात्र विनाश के सपने देख रहा हें। आत्मकेंद्रित होकर आतंक जमाने का प्रयत्न कर रहा है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में इस समस्यापर गहराई से सोचकर तांत्रिक शिक्षा की आवश्यकता की ओर संकेत करने का प्रयत्न भी किया है।

आज संसार की सबसे भयावह समस्या है बेरोजगार। अमरीका, इंग्लैंड, चीन आदि देशों में भी आज यह प्रश्न सता रहा हें। इस समस्या में शिक्षित अशिक्षित, लूले-लंगडे सब पिसते जा रहे हैं। यह समस्या केवल इने-गिने लोगों को नौकरियाँ उपलब्ध करा देने से हल नहीं हो सकती। विकसित देश के साथ यह समस्या उभर उठती है। भारत में औद्योगिक विकास के साथ-साथ यह समस्या बढ़ी है। बेकारी से अजीज आकर बेकार व्यक्ति कुकर्म की तरफ मुड़ता जा रहा है, ग्रामों में महानगरों में यह समस्या विकराल बनती जा रही है। स्वतंत्रता के पश्चात यह समस्या अधिक भयावह बनी। जनसंख्या में वृध्दि, भूमिकी सीमितता, कुटीर उद्योगों का अभाव, परंपरागत कृषि आदि के कारण यह समस्या ग्रामों-महानगरों में बढने लगी। बेकारी से छात्र कुंठित, मजबूर, निरूत्साही बनने लगे हैं।

सन 1970 के बाद यह समस्या उपन्यासों मे क्षीण होने लगी है। सरकार की शिक्षा विषयक उदार नीति के कारण शिक्षितों की संख्या बढ़ती जा रही है। आज सरकार स्वयंरोजगार के लिए कर्ज उपलब्धी, कृषि औद्योगीकरण, समाज कल्याण, सेवा-नियोजन केंद्रो को गतिशील बनाकर इस समस्यापर हल ढूँढ रही है। परिवर्तित समाजजीवन के अनुकूल शिक्षा-नीतिमें बदलाव की स्थितियाँ ही इस समस्या का सही हल हो सकती है। लेखकने भी इसी बात पर संकेत किया है।

(4) <u>गुंडई की समस्या</u> :

आदमी जब भूखा रहता हैं, समाजव्दारा उसे मान्यता नहीं मिलती, उसे समाज में सम्मान प्राप्त नहीं होता, उसे भौतिक सुखों का आकर्षण होता है, तब आदमी में गुण्डईकीप्रवृत्ति निर्माण होती है। छात्रों को इस प्रवृत्ति की ओर बढाने के लिए समाज सहायता देता है। समाज ही छात्रों को आतंक या गुण्डई प्रवृत्ति के लिए विवश करता है। छात्रों की गुण्डई सिर्फ विश्वविद्यालय में ही नहीं है, बल्के सर्वत्र फैली है। राजनीतिक नेता छात्रों को हाथिया लेकर उनके व्दारा गुण्डई करवाते हैं। छात्रों को दोषी ठहराते हैं। उस गुण्डाई की प्रवृत्ति के लिए समाजव्यवस्था दोषी है, क्योकि, छात्रों को सामाजिक व्यवस्था में सही स्थान नहीं मिलता जा रह है। शिक्षा की गलत व्यवस्था के कारण बेरोजगारों की बढ़ती हुअी समस्या छात्रों में नैराश्य की स्थिति लाती है और उससे छुटकारा पाने के लिए छात्र मद्यपान या गुण्डई करनेमें लगते हैं। विश्वविद्यालयीन और महाविद्यालयीन छात्रों में यह प्रवृत्ति आज पनपने लगी है।

आत्मकेंद्रित नेताओं और राजनीतिक दलों ने अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए छात्रों को अपना हथिया बनाया। छात्र असंतोष और उससे संबध्द उग्रवादी गतिविधियों के अध्ययन विश्वविद्यालयीन छात्रों तक ही सीमित रहे हैं। राष्ट्रीय नवनिर्माण की वर्तमान स्थिति में हम छात्रों की विशेषताओं, समस्याओं और सामाजिक आर्थिक विकास की प्रक्रियाओं में उनकी प्रदेयता पर विचार करने में कोई रुचि नहीं ले रहे हैं।

भारत देश आज एक अभूत पूर्व संक्रमण से गुजरता जा रहा है। उसका यह संक्रमण एकतरफ पश्चिम के विकसित समाज की छात्रपीढी के प्रति परानुभुति का परिचायक है। भारत समाज में मानवी मूलयोंपर आधारित समाज व्यवस्था का पक्षधर है। भारत चाहता है कि, छात्रों को सम्मान का स्थान मिले और छात्र सत्कर्म की तरफ मुड़े फिर भी छात्रों को गलत रास्तों को अपनाने के लिए आज की समाज स्थितियाँ ही कारण हैं। इससे गुंडई बढ़ने लगी है। छात्रों को गुंडई को बाध्य करनेवाली सामाजिक परिस्थितियाँ "गली आगे मुड़ती हैं" में हमें देखने को मिलती हैं। देबू, रमेंद्र जेसे छात्र पुजारी को पिटते हैं, अगर पुजारी किराया ठिक ढंग से मॉंगता तो इस तरह का बर्ताव छात्र कभी भी नहीं करते। समाज के ऐसे लफंगों को ठिक करने के लिए उनपर हाथ चलाना ही सही है। पुजारी किराया मांगने का अधिकारी न होकर भी किराया मॉंगता हैं, और वह भी लोगों को धमकाकर, इसकी यह हरकत बंद करनेके लिए इन दोनों को गुंड्रा बनना पडता हैं। अगर सभी छात्र एक हो जायें और उनकी शक्ति अच्छे कार्यो में जुड जाये तो वहां स्वर्ग बन जायेगा। अतः उन्हें सही मागदर्शन की आवश्यकता है, उन्हें सही पध्दति से समझ लेना आवश्यक है।

कुछ सामाजिक शक्तियाँ छात्रों को उकसाना चाहती है। जिससे छात्र गैरकानूनी करतूतें करने को बाध्य होते हैं। बक्कड़ गुरु ऐसा ही एक व्यक्ति है, जो छात्रों को हथिया लेकर उन्हें रुपयों का लालुच दिखाकर उनके व्दारा बेकानुनी कार्य करवाता है। रामानंद को टूरिस्टों को काशी घुमाने और वहाँ की पौराणिक चीजों को समझाने का काम देना चाहता है। इसके के बदले में अपने गैरकानूनी धंदों में रामानंद का इस्तेमाल करना चाहता है। उसे पाँच सौ रुपये ओर कमरा देकर अपने स्वार्थ के लिए उसका इस्तेमाल करना चाहता है। लेकिन रामानंद आदर्श विचारों का छात्र होने के कारण बक्कड़ गुरु के मोह जाल में नहीं फँसता।

छात्रों की गुंडई की समस्या देश के लिए हानिकारक है जिससे देश का भविष्य संकट में पड़ जाता है। आज के छात्र पश्चिमी सभ्यता से कायल बने हैं। पश्चिमी सभ्यता के अनुकरण पर अपनी जिंदगी बखाना चाहते हैं। छात्रों की इस स्थिति का फायदा बक्कड़ जैसे लोग उठाते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के सारे युवक पात्र बक्कड गुरु के हाथोंमें खुद को बेचकर उसके पालतू कुत्ते को है। वे बक्कड के इशारे पर नाचते हैं। वे अपने हक और कर्तव्य के लिए लड़ना आवश्यक मानते हैं, मगर क्रान्ति सोच समझकर करनी चाहिए। मार्क्सवाद आवश्यक है, उसके सिवा हकों के प्रति चेतना निर्माण नहीं हो सकती है।

<u>निष्कर्ष</u> :

प्रस्तुत उपन्यास के व्दारा हमे यह पता चलता हैं कि, छात्रों व्दारा की जानेवाली गुंडइ के लिए सिर्फ छात्र जिम्मेदार नहीं हे, बल्कि उनके साथ शिक्षण व्यवस्था, बेरोजगारी, राजनीतिक नेता, समाज में छात्रों की अप्रतिष्ठा, बेकानुनी करतुलोंवाले लोग आदि सब छात्रों की गुंडई के लिए जिम्मेदार हैं। छात्रों व्दारा की गयी गुंडई कभी सही तो कभी गलत रहती है। आज काश्मीर में चले आतंकवादिओं की कारवाईओं से यह साबित हो रहा है कि, अगर छात्रयों को सहि मार्गदर्शन नहीं मिला तो वे आतंकवादी के सिवा कुछनहीं बन सकते। आये दिन आतंकवादी छात्रों की संख्या बढनेलगी है। छात्रों की शक्ति विशाल है, उसका सही उपयोग होना आवश्यक हैं। विश्वविद्यालयों में दी जानेवाली शिक्षा के साथ सही संस्कार और अच्छे आदर्श की आवश्यकता है। आज राजनीति को शिक्षा से अलग रखना आवश्यक है, जिससे यह समस्या हल हो सकती है।

12704
A

(5) <u>बाढ़ की समस्या</u> :

यह प्रकृति प्रदत्त समस्या हैं। अतिवृष्टि, भूचाल सूखा ये निसर्गप्रदत्त समस्याएँ हैं, जिनपर विजय पाना कठिन है। बाढ से घर-बार बह जाते हैं खेतखलिहान नष्ट होते हैं। फसल की बरबादी होती हैं। बिमारियाँ फैलती हैं। प्रस्तुत उपन्यास "गली आगे मुड़ती हैं" में इस समस्या का चित्रण हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास में बाढ ग्रस्त काशी नगरी के माहौल का चित्रण प्रस्तुत किया है। इस बाढ से पीडित लोगों मे जान-माल का खतरा पैदा हो चुका है। रामानंद तिवारी और मठ में रहनेवाले सभी लोग इस समस्या से ग्रस्त हैं। ये लोग अनेक प्रकार की संसर्ग-जनीत बिमारियों से ग्रस्त बने हैं। चारों तरफ दुर्गंधी फैली है, जिससे पूरा परिवेश बेचैन बन गया है। रामानंद बाढ के अवसर पर अपनी बूढिया को पानी से बचाता है। छात्र-शक्ति की सहायता से लोगों को सुरक्षित जगहोंपर ले जाकर राहत कार्य पहुँचाने का काम शुरु है। रामानंद तिवारी बाढ़ में से बह जाता है, घर तक भी पहुंच नहीं सकता है। इस बाढ ग्रस्त दशा पर सोचते समय प्रोफेसर भट्टाचार्य कहते हैं - "यही हमारा देश है, समझे! बाढ से घिरा महान भारत! नये पानी की ऐसी आमद हो रही है कि, सब कूल-किनारे टूट गये हैं। कोई मर्यादा नहीं। दूसरी ओर इस नये जल की अधिकता ने वे प्रणालियाँ भी बंद कर दी जिनसे सदियों का गलीज धीरे ही धीरे सही बहा करता था। धारा में मतलब का सड़ा हुआ पानी पता नहीं यह दौर कब तक चलेगा?"[9]

हर साल गंगा को आनेवाली बाद से लोगों को बचना पड़ता है। अनेक लोगों के घर और जान-माल की हानि होती है। जीवनक्रम में रुकावटसी आती है, रात-रात लोग सो भी नहीं सकते। लोग आपस का बैर, मजहब को भूलकर एक दूसरे की साहयता करते हैं।

<u>निषकर्ष</u> :

प्रस्तुत उपन्यास में इस समस्या पर लेखक ने केवल संकेत करके छात्र शक्ति प्राकृतिक आपत्तियों में कैसे काम आती है, इस पर सोचा है। बाढ़ की समस्या के संकेत व्दारा उन्होंने काशी के सांस्कृतिक और सामाजिक वातावरण पर प्रकाश डाला है। छात्र लोगों की सुरक्षा करना, उन्हें राहत कार्य समयपरपहुंचाने के काम आते हैं। समय पडने पर ये छात्र सेवा-कार्य में जी जान से जूट जाते हैं। अर्थात छात्र-शक्ति सही दिशासे आगे बढी तो वह विधायक कामोंमें बडा योगदान निभा सकती है। उनमें देशप्रेम, राष्ट्रप्रेम पैदा कराने में यदि भूल हो जाये तो यह शक्ति विघातक कार्य में जुट जाती है। लेखकने यहाँ यह विशद करना चाहा है कि छात्र-शक्ति का उपयोग सही पैमानेपर करनेमें

ही देश की भलाई है।

(6) **भाषा आंदोलन की समस्या** :

15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ। स्वतंत्रता के बाद जनभावनाओं को जोडने का काम हिंदी ने किया। भाषा परमात्मा प्रदत्त मानव जाति को मिला एक वरदान है। जिसप्रकार मनुष्य भाषा के बिना गूंगा हैं, वैसे कोई भी स्वाभिमानी और स्वतंत्र राष्ट्र भी राष्ट्रभाषा के बिना सुप्रतिष्ठित हो नहीं सकता। राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने तथा उनके समकालीन उन्नायकों ने हिंदी के उत्थान का प्रयत्न किया था, उसका मूल कारण यही था। गांधीजी जानते थे कि, स्वतंत्रता प्राप्ति तथा सनूचे देश की एकता के लिए हिंदी ही एक साधन है। स्वतंत्रता प्राप्ति, के बाद हिंदी के व्दारा ही देश की उन्नति हो सकती है। विदेशी भाषा के व्दारा कोई भी राष्ट्र विकसित ओर उन्नत नहीं हो सकता।

इसी धरातलपर 14 सितंबर, 1950 को भारतीय संविधान परिषद ने राष्ट्रभाषा सम्बन्धी यह धारा स्वीकार की थी और निश्चय के अनुसार सन 1965 से हिंदी को अंग्रेजी के स्थानपर पूर्ण प्रतिष्ठित होना अनिवार्य था।

परंतु प्रशासन यंत्रणा के उच्चपदाधिकारी, मौलाना आजाद जैसे शीर्षपदस्य राष्ट्रनायक, केंद्र सरकार व्दारा उपेक्षा, दक्षिण भारतीय लोगों व्दारा उपेक्षा आदि के कारण हिंदी की दुरावस्था अभी तक सुधर नहीं सकी है। हिंदी के साथ अनेक राष्ट्रभाषाओं की चर्चा होने लगी इससे त्रिभाषा सूत्र का निर्माण हुआ। अंग्रजी को सुदृढ बनाने का यह एक अच्छा तरीका तलाश किया गया।

जनवरी, 1965 में संविधान के अनुसार हिंदी अंग्रजी के आसनपर विराजमान होकर राजभाषा बननी चाहिए थी परंतु उसी समय हिंदी विरोधी वातावरण तैयार किया गया। तामिलनाडु और बंगाल में हिंदी विरोधी तीव्र आंदोलन हुए। हिंदी अक्षरों पर तालकोल पोता गया, हिंदी सेवी संस्थाओं के सेवकों पर हमले हुए। सरकार ने हिंदी का अहिंदी प्रातों पर न थोंपाने का विधेयक पारित किया जिससे हिंदी जगत में तहलकासा मच गया काफी विरोध हुआ और हिंदी प्रेमियोंव्दारा आंदोलन भी खडे किये गये। "गली आगे मुड़ती हैं" में हिंदी भाषा आंदोलन की समस्यापर पर गहारा चिंतन करके लेखक ने हिंदी की अनिवार्यता पर बल दिया है।

हिंदी भाषा की मॉंग करनेवाले आज भी कुछ छात्र संगठन हैं। "अखिल भारतीय छात्र सेना", "स्टुडंट फांडरेशन ऑफ इंडिया" जेसे छात्र संगठन हिंदी भाषा की मॉंग करते रहे हैं। अतः हिंदी छात्र

आंदोलन का एक हिस्सा बन गयी हैं। जब तक हिंदी हमारे देश के व्यवस्थापन की भाषा बन नहीं सकती तब तक अंग्रजी का प्रभुत्व बनता रहेगा। प्रस्तुत उपन्यास में विश्वविद्यालयीन छात्र आंदोलन का विषय हिंदी भाषा ही रहा है। नंदू, देबू, रामानंद जैसे अनेक छात्रों ने हिंदी भाषा आंदोलन खडा किया, बहुत सारे छात्र इसमें शामिल हुए। अंग्रजी में लिखे गये सभी साइनबोर्ड निकालकर फेकें गये। "अंग्रजी में काम नही होगा", फिर से देश गुलाम नहीं होगा" इसीतरह की नारेबाजी शुरु हुअी। सभी छात्र एक होकर इस आंदोलन में आये। "लोहिया" ने अपनी किताब में भाषा के बारे में लिखा है – "अंग्रजी जबान अब हिंदुस्तान के सार्वजनिक मामलों से खतम हो जानी चाहिए। इसमें देर करना न केवल भाषा के मामले को उलझा देना होगा बल्कि देश के दूसरे मसलों को भी बिगाड़ देना होगा। भाषा से देश के सभी मामलों का संबंध है। किस जबान में सरकार का काम चलता है, इससे समाजवाद तो छोड़ ही दो, प्रजातंत्र भी छोडो, ईमानदारी और बेईमानी का सवाल तक जुड़ा है। यदि सरकारी और सार्वजनिक काम ऐसी भाषा में चलाये जाये जिसे देश के करोडों आदमी न समझा सके तो होगा केवल एक प्रकार का जादू-टोना। जिस किसी देश में जादू ओर टोना-टटका चलता हैं, वहाँ क्या होता है? जिन लोगों के बारे में मशहूर हो जाता हैं कि, ये जादू गैरव से बिमारियाँ आदि अच्छी कर देते हैं, लाखों-करोड़ों उनके फंदे में फँसे रहेंगे। ठीक ऐसा ही जबान का मामला हैं। जिस जबान को करोडों लोग समझ नहीं सकते उसके बारे में यहीं समझते हैं कि, कोई गुप्त विद्या है, जिसे थोडे लोग ही जान सकते हैं, ऐसी भाषा में जितना चाहे झूठ बोलिए, धोखा कीजिए सब चलता रहेगा, क्योंकि, लोग समझेंगे ही नही।"[10] दक्षिण भारतीय संसद सदस्यों के दबाव में आकर राजभाषा विधेयक पेश किया जाने को था। पंडित जवाहरलाल नेहरु के वचनों की याद दिलाकर कुछ भारतीय संसद सदस्यों ने माँग की कि, हिंदी के साथ तब तक अँग्रेजी चलती रहे जब तक अहिंदी भाषा राज्य उसे बंद कराने को न कहे। हिंदी का मसला पिछले बीस वर्षो से हमेशा खटाई में डाला जाता रहा है। बहुत कोशिशों के बाद हिंदी को राज्यभाषा बनया पर वह सिर्फकागज पर रहा। अहिंदी भाषियों को पंद्रह बरस का समय दिया ताँकि, वे काम चलाऊ हिंदी सीखे। पंडित नेहरु के व्दारा और पाँच बरस बढ़ाने की बात हुअी और वे कहते हैं कि, हिंदी के साथ अंग्रजी भी रहेगी। जाहिर हैं कि, अंग्रजी और हिंदी को यदि एक जुए में जोत दिया जाय तो इस देश में जिसका शासन तंत्र अब-तक अंग्रजीदा लोग ही चला रहे हैं, हिंदी हमेशा दबा दी जायेगी, और विलायतियों का बुलडोझर हिंदी को दबोच लेगा या हमेशा के लिए दबा देगा। आज डर है कि, कई वह समय जल्दी भी आ जायेगा।

अंग्रजी भाषा तो हमारे भारतीयों को बहुत प्रिय लगती है। अंग्रजी में थोडी बहुत बातें करके

वे खुद को विद्वान समझते हैं। उसमें उन्हें अपनी शान लगती है। अंग्रेजों ने हमारे देशपर ड्ढ सौ वर्ष राज करके भी अंग्रजी का प्रभाव अब तक हमारे ऊपर छोड दिया है। हिंदी भाषा को अपनाकर हमारे देशवासियों का कौनसा नुकसान होगा? चीन, जपान जैसे देश हैं, जिन्होंने अपनी भाषा अपनायी। वे देश किस बात में पिछे रहे सभी शास्त्र अब हिंदी में अनुदित हो रहे हैं। हमारे हिंदी का साहित्य तो इतना बडा और ऊँचे दर्जे का है कि, परदेशी लोग इसे पढ़ने के लिए हिंदी सीख रहे हैं। इस स्थिति में हमारा कर्तव्य यह हैं कि, हम हमारे भाषा को सशक्त बनाये उसे कमजोर होने से बचाये। व्यवहार में, प्रशासन में, शिक्षा में सभी क्षेत्रों में हिंदी को लानेके प्रयत्न करें।

अगर हिंदी सभी क्षेत्रों में होती तो एक हवालदार व्दारा जगरुप को नहीं फसाया जाता। झूठे कागजानों को दिखाकर जगरुप को हवालदार भीख मँगने के लिए मजबूर करता है। रामानंद ने वह कागद देखे तब हवलदार समझता है कि, वह अंग्रेजी समझ सकता है। वह कहता है – "अच्छा–अच्छा मालूम हो गया कि, तुम अंग्रजी जानते हो, निकल जाओ यहाँ से जल्दी। यह मुगलसराय है --- मुगलसराय। यहाँ यार्ड से रोज चोरी होती है और अपना काम ही है, गिरफतारी।" **11** यो लोग ऐसे मजबूर बच्चे या लोगों को पकड़कर उनसे भीख मँगवाते हैं, और ऊपर से कडे शब्दों में उससे बात करते हैं, ताकि उसकी असलियत छिपी रहें।

<u>निष्कर्ष</u> :

अंत में हमें यहाँ यह स्पष्ट होता हैं कि, किसी भी राज्य की अपनी स्वतंत्र भाषा हो जिससे उस देश के विकास में कोई रुकावट न आये। विचार प्रस्तुती के लिए एक भाषा होनी आत्रश्यक है। छात्रोंव्दारा चलाये गये इस भाषा आंदोलन को शासनव्दारा सहायता प्रदान करनी चाहिए। देबू, रमेंद्र, रामानंद आदि छात्र इस आंदोलन का नेतृत्व करके हिंदी को कुछ मात्रा में न्याय देने के लिए लढ़ते हैं, लेकिन आज तक हिंदी को राजभाषा का स्थान नहीं मिल चुका है। आज भी सरकारी कार्यालय, कानुनी कारवाई आदि में लोगों को फँसाया जा रहा है। हिंदी भाषा आंदोन्लन सही दिशा से जाकर सफल होने चाहिए। भाषा विषयक उदारदृष्टि राजनेता और शासन प्रणाली में हो तो ही भाषा समस्या का हल हो सकता है।

(7) <u>पुलिस भ्रष्टाचार की समस्या</u> :

आज सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का दौर-दौरा शुरु है। हर माहौले में अलग-अलग ढंग से भ्रष्टाचार का तरिका अपनाया जा रहा है। सरकारी दफतरों, शिक्षालयों, पुलिस कार्यालयों, न्याय संस्थाओं, सहकारी संस्थाओं, कारखानों आदि सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार एक सिस्टाचार बन बैठा है। सत्ता को अपने हाथ में केंद्रित करके सरकारी दप्तरों में भ्रष्ट नीति का प्रबल प्रचलन शुरु है। रिश्वत लेकर अपने इच्छित स्वप्न को पूरा करने की धून में व्यक्ति लगा रहा है। कालाबाजारी, तस्करी, महंगाई आदि सभी के जड में भ्रष्टाचार ही है। सरकारी विकास योजनाओं की कार्यपूर्ति में सरकारी अफसरों व्दारा बहुत बडा भ्रष्टाचार किया जा रहा है। सरकारी कागजातों की पूर्ति के लिए पैसे दिये बिना काम नहीं हो सकता, नहीं तो काम में अक्षम्य विलंब होता है। जनता में फैले अज्ञान ओर जनता की अशिक्षितता का फायदा ये लोग उठाते हैं और उन्हें लूटते हैं तथा अपना उल्लू सीधा करते हैं। पुलिस भ्रष्टाचार का चित्रण आलोच्च उपन्यास "गली आगे मुड़ती हैं" में मिलता है।

प्रस्तुत उपन्यास का पात्र जगरुप अपने माँ-बाप से दूर भाग गया था। उसे रखवालदार झूठे कागजात दिखाकर भीख मांगने के लिए मजबूर करता है। कानून के रक्षक, कानून के भक्षक बने हुए है। लक्षित होता है। रामानंद तिवारी की साहयता से जगरुप छूट जाता हैं। परंतु ऐसे कितने जगरुप इस देश में होंगे जो इन लोगों के शिकार बने हैं। इसी कारण हमारे देश की विकास गति कुंठित हो गयी है।

जगरुप को फंसानेवाले रखावलदार के हाथ के कागजात रामानंद देखता है, और कहता हैं कि, "श्रीमान इसमें जगरुप वल्द शीबू नहीं रामसिंह वल्द मिट्टू लिखा है, और यह 1965 का बेतामील वारंट है, जिसे दिखाकर आपने इस लडके को नाजायज तरीके से पिछले छः महिनों से बंद कर रखा है। दिनभर आप इससे भीख मँगवाते हैं। सुबह-शाम चौका बर्तन करवाते हैं। आप सरकारी कर्मचारी हैं या भ्रष्टाचारी?"12 ऐसे लोगोंव्दारा अज्ञानी लोगों को ठगाया जाता है। हरिमंगल भी इसी समस्या का शिकार बनता है, और उसे नौकरी से हटाया जाता है।

<u>निष्कर्ष</u> :

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में पुलिस भ्रष्टाचार पर प्रकाश डाला है। आज की पुलिस लोगों के अज्ञान का फायदा उठाकर उन्हें लूटती है, आज की पुलिस रक्षक न बनकर भक्षक बनी है। छोटे-छोटे कारणों से गरीबोंको सताती है। इस भ्रष्टनीति को ध्वस्त करने के लिए जनता में प्रबोधन होने की और जनता को ज्ञानी होने की आवश्यकता हैं। आज बीसवीं सदी में पुलिसव्दारा शोषण

प्रभावी रुप में नजर आ रहा है। पुलिस व्दारा पूंजीपतियों से दांत-काटी-रोटी का संबंध रखना, सत्ता को केंद्रित करके नारियों को भोगना, दलालों के माध्यम से भ्रष्टाचार करना, अपने षडयंत्रो में दलालों के माध्यम से भ्रष्टाचार करना, अपने षडयंत्रों में लोगों को फंसाना आदि के व्दारा पुलिस भ्रष्टनीति अपना रही हैं। आज कुछ मात्रा में पुलिस का भय कम हुआ है। आज उच्च-शिक्षित लोग इस माहोलमें पदाधिकारी बन जाने के कारण इस क्षेत्र से परंपरागत घुसखोरी का प्रमाण कम होने लगा है।

(8) <u>ग्राहकों को ठगाने की समस्या</u> :

सामान्य लोगों को अनेक लोग ढगाने का प्रयास करते हैं। हमारे देश के बहुत से लोग अज्ञानी और अंधःश्रध्द होने कारण वे सच-झूठ को समझ नहीं पाते हैं। धर्म के नामपर, प्रशासकीय कामकाज के नामपर, शिक्षा व्यवस्था के नामपर जनता को लुटने का प्रयास हो रहा है। लोगों का अज्ञान इसके लिए जिम्मेदार है। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि, लोग भविष्य में होनेवाले परिणाम का विचार करके डरते हैं। वे अपने ऊपर किये जानेवाले अत्याचारों का मुँह तोड जवाब नहीं दे सकते। बडे लोगोंव्दारा लूटा या ढगाया जाने पर भी अपने हक की लडाई लढने में घबराते हैं। फलतः ऐसे लोगोंपर ज्यादा अत्याचार होते हैं। गली के दुकानदार व्दारा लोगों को ढगाया जाता है। मिलावट से युक्त पदार्थ खुले आम बेचे जाते हैं। लोग उसे आँखें बंद किये खरीदते हैं। कभी इसपर गंभीरता से नहीं सोचते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में ग्राहकों को ढगाने की समस्या पर शिवप्रसादसिंह ने सोचा है।

तिवारीजी की गली में मिलावटी चीजों को बेचनेवाला एक दुकानदार है। रामानंद जैसे छात्रों के आंदोलन के असर से उसकी दुकान उसे बंद करनी पडी। दुकानदार इसपर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहता हैं कि "तुम्हारे इस आंदोलन से हमारी दुकान बंद करनी पडी। डर के मारे लोग कुछ खरीदने नहीं आते हैं। इसपर रामानंद कहता हैं - "ठीक हुआ। खुब ठगते हो भोले -भोले ग्राहकों को। मसाले में लकड़ी का बुरादा, घी में चर्बी, तेल में भंड़भाड का तेल --- अब निकलेगा सब।"[13] इसीतरह ये दुकानदार मिलावट करके ग्राहकों को लुटते हैं। इसमें ज्यादाततर कृषक लोग लूटते जा रहे हैं।

<u>निष्कर्ष</u> :

शिवप्रसाद सिंहजी ने ग्राहकों को दुकानदाव्दारा ठगाने की समस्या पर केवल संकेत करके

सामाजिक जीवन की समस्याओं के प्रति अपनी प्रतिबध्दता सिध्द की है। आज दैनंदिन जीवन में ग्राहकों को मिलावट जन्य पदार्थों के माध्यम से दुकानदारव्दारा लूटा जा रहा है। मिलावट प्रतिबंध कानून पारित करके सरकार ने शुध्द पदार्थ मिलने के लिए प्रयत्न शुरु किया है परंतु ये लोग सरकारी अफसरों को रिश्वत देकर अपना उल्लू सीधा करके लोगों के प्राणों से खेलने का प्रयत्न करते जा रहे हैं। आज ग्राहकों को केवल मिलावट करके ही नहीं ढगाया जा रहा हैं, इसके साथ-साथ समय असमय कीमतें बढाकर नाप-तौल में डंडी मारकर, रंगसदृश्य पदार्थों की खादय पदार्थो में मिलावट करके, रॉकेल में पानी की मिलावट करके भी लोगों को फंसाया जा रहा है। आज ग्राहक भी सतर्क हो रहे हैं। ग्राहक पंचायतों का निर्माण हो रहा है, परंतु अज्ञानी ग्राहकों को तो हमेशा फंसाने का प्रयत्न शुरु है। लेखक ने इस बात पर संकेत करके सामाजिक जीवन के प्रति अपनी प्रतिबध्दता सिध्द की हैं।

(9) <u>अश्लीलता की समस्या</u> :

फ्रायडर के मतानुसार मानव की समस्त मनस्थितियों, मनोरोगों और मनोविकारों का मेरुदंड मौन भावना है। प्रेमभावना यौवन के बिना नहीं फूलती लेकिन आज के छात्र इसका गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। जिसके कारण यह एक समस्या बनी रही हैं। छात्रवर्ग इस समस्यासे घिरा हुआ है। कॅालेज में पढ़नेवाले लड़के-लडकियाँ इस समस्या से ग्रस्त हैं। समाज में कुछ ऐसे भी छात्र हैं, जो सेक्स के नामपर बुरे रास्ते, अपना रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास "गली आगे मुड़ती हैं" की जयंती इस बात पर प्रकाश डालते हुए कहती है - "सारा युवा-आक्रोश सेक्स में क्यों सिमटकर रह गया हैं"? हमारे बंगाली समाज में भी आक्रोश के नामपर शराब और सेक्स बस ये ही दो लक्ष्य रह गये हैं। लडके माता-पिता से चिढ़ते हैं, क्योंकि , उन्होंने अपने सुख के लिए लडकों की कभी परवाह नहीं की। परिवार के नाम पर एक पिंजड़ा बना है, सर्वत्र। उसमें कुछ लोग किरायेदार की तरह अलग-अलग रहते हैं। सब अपने हिसाब में अपनी जिंदगी जीने के लिए ललक रहे हैं, बडा विश्वास लेकर आगे बढ़ते हैं, कोई कविता बनने चला तो बुभुक्षित पीढ़ी के नाम पर सेक्स का शिकार हुआ, चित्रकार बनने चला तो अश्लील, नंगे और भद्दे चित्र बनाने लगा। सर्वत्र एक ही मुद्रा है, जिसके बीच में अंकित है एक लड़की जो खुद अपने पारिवारिक दबाव के नीचे पिस रही है। उठना चाहती हैं, उसमें भी आक्रोश हैं, पर बाहर आने पर पाती हैं, कि, उसमें हमउम्र कुछ लोग उसे ही नोचने के लिए मोरया बाँधे खड़े हैं। उसे नौकरी तब तक नहीं, मिल सकती जब तक वह अपना सौदा न कर ले।"[14]

बक्कडगुरु जैसे समाज के गंदे लोग लडकियों के "ब्लू फिल्म" निकालकर उन्हें ब्लैकमेल कर रहे हैं। लडकियों को बेचा जा रहा है। अभी कुछ दिन पहले जलगांव, सावंतवाडी में स्थित वासनाकांडों को प्रकाश में लाया गया। बढ़ती हुअी यह गंभीर समस्या नैतिक पतन की ओर झुक रही हैं। भारतीयों की पवित्र संस्कृति, देवतातुल्य नारी संस्कृति अब गिरती जा रही है। समाज में नैतिकता के नामपर अंधेरा है। आये दिन लडकियों पर बलत्कार हो रहे हैं। देश में इस मामले में कोई कानुन नहीं है जिसे वास्तव में लाने के लिए और न जाने कितने दिनों का इंतजार करना पडेगा। अश्लिलता के नामपर अपनी भावनाओं और वासनाओं को तृप्त करने के लिए जबरी बलात्कार किये जा रहे हैं। "गली आगे मुड़ती हैं" में नंदकिशोर की बहन रज्जो इस बलात्कार का शिकार बनी है। दो–तीन युवकों ने अपनी कुंठित कामवासना को पूरा करने के लिए उसपर बलात्कार किया। रज्जो दलित होने के कारण उसे उसकी पूछताछ करनेवाला कोई नहीं है। वह अपनी व्यथा को प्रकट करते हुए कहती है-- "हम लोग गरीब है, हरिजन है, इसी से क्या हमारी इज्जत का कोई मोल नहीं है। दुनिया शील को भी जाति के तराजू पर तौलती है। हरिजन लडकी के शील से ब्राहमण लडकी के शील का ज्यादा मोल आँका जाता हैं, आँको। मुझे मलाल नहीं। पर हमारे शरीर के टूटने–फूटने की भी वैसी ही पीड़ा होती हैं, वैसी ही हूक उठती है", वैसी ही आत्मघात की इच्छा होती हैं, इसपर कोई कुछ नहीं सोचता। कितनी बेगैरत की जिंदगानी है अपनी"।[15]

<u>निष्कर्ष</u> :

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि, इस समस्या को सुलझाने के लिए नारिओं को दृढ निश्चयी बनना होगा। अत्याचार को तोड़ना होगा, परंपरागत दायरों से बाहर आकर वास्तविकता को. देखकर उसे समझकर अत्याचारिओं को मिटाना होगा। नहीं तो आये दिन वासनाकांड बढते जायेंगे। नारी का स्थान गिरता जायेगा। समाज के बक्कडगुरु जैसे लोगों की जड उखाडना होगा। आज यह समस्या गंभीर रुप धारण कर रही है। आज जलगांव, सावंतवाडी वासनाकांड इसके अच्छे उदाहरण हो सकते हैं। इसी अवैध वासनासक्ति की प्रबल भावनाने "एडस" जैसी बिमरियाँ जनसामान्य में फैलने लगी हैं। जिससे समाज जीवन का स्वास्थ बिगड़ता जा रहा है। ऐसी समस्याओं की तरफ युवकछात्रों व्दारा कोई ठोस कार्य करने की अभिलाषा यहाँ लेखक व्यक्त कर रहे हैं। युवा–छात्रों की शक्ति असमय यदि ऐसी गंदी हरकतों पर खर्च होने लगेगी तो उनका भविष्य अंध:कारमय बनेगा। इस समस्या के माध्यम से इस ओर भी लेखक ने संकेत किया हुआ है, ऐसा लगता है।

(10) आतंकवाद की समस्या :

आज चारों ओर आतंकवाद फैला है, राजकीय क्षेत्र, शिक्षाक्षेत्र, जनमानस सभी में आतंक फैला हैं। आतंकवादियों का उद्देश्य किसी भी क्षेत्र में अपना दबाव निर्माण करना या शासकीय व्यवस्था को हिला देना होता है। आतंकवाद में पूर्व दुश्मनी या क्रोध का सिलसिला नहीं रहता है। जान बुझकर अपना आतंक या दबाव फैलाया जाता है। इसमें खून अपहरण आदि का प्रयोग किया जाता है। लेकिन आजादी के बाद आतंकवादी प्रवृत्तियों ने विविध रुप धारण किये हैं। आज अपने नीजी स्वार्थ के लिए छात्रों को भड़काया जाता है और उनका एक गुंट बनाकर उन्हें प्रशिक्षण देकर देश को नष्ट कराने के लिए बाध्य किया जाता है। काश्मीर, पंजाब, और हालही में हुआ बंबई बम विस्फोट आदि आतंकवाद के अच्छे अदाहरण हैं। वहाँ का जनजीवन आतंक से बिगड़ता जा रहा है।

आतंकवादी सामाजिक बंधनों को ठुकराकर नागरिकों को धमकाकर जनमानसपर आक्रमण करते हैं। ये आक्रमण तुफानी होते हैं। आतंकवादी यकायक आकर दंगा-कसाद खुन-खराबा करके

जल्दी भाग निकलते हैं। दूसरी बात यह है कि, किसी माँग को पूरी करवाने के लिए शासन के खिलाफ आतंकवाद का प्रयोग किया जाता है। संगठित गुंट के बल पर छात्रों को आतंक जताने के लिए प्रशिक्षित करना, एक वंश का दूसरे वंश पर आतंक जमाने के लिए वांशिक आतंकवाद का निर्माण करना, सांप्रदायिकता तथा जातीय मसलों के आधारपर आतंकवाद की प्रतिष्ठापना करना, अपनी वांछित मांगों की पूर्ति के लिए छात्र-संगठन तथा अन्य व्यवसायिक संगठनोंव्दारा आतंकवाद का अनुकरण करना आदि आतंकवाद के विविध आयाम आज लक्षित हो रहे हैं। इन आतंकवादी आयामों से संघर्ष, आंदोलन, खुनखराबा, मारकाट, आगजनी, हाथापाई आदि का निर्माण होकर पूरे देश में अशांति छा जाती है। "राममंदिर बाबरी मसजिद का मसला, पंजाब-काश्मिर का मसला तथा श्रीलंका का वांशिक संघर्ष इसके अच्छे उदाहरण हो सकते हैं। इन आतंकवादीयों में बडी संख्या में युवाछात्र प्रतिमार्ग हो रहे हैं। यह चिंता का विषय है। बदलाव इन आतंकवादीयों का मूल उद्येश्य रहता है। आतंकवादी छात्र प्रोफेसर का खून, बमबारी आदि कुकृत्य करते हैं। क्रान्तिकारक, आतंकवादी, नक्षलवादी आदि आतंकवादी के अंतर्गत आते हैं।

इस आतंकवादी प्रवृत्ति का चित्रण हमें शिवप्रसाद सिंहजी के "गली आगे मुड़ती है" उपन्यास में देखने को मिलता है। सभी लोग एक विशिष्ठ आतंक से घिरे हुए हैं, कोई भी अपने

आप को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा हैं। बक्कडगुरु व्दारा रजुल्ली आतंकग्रस्त है और रजुल्ली के आतंक से अन्य लोग आतंकग्रस्त हैं। रामानंद आतंक को लेकर सोचता है कि – "यह आतंक एक संक्रामक रोग है जो सारी आबादी को घेर रहा है और हम कभी उसकी थाह लगाना भी नहीं चाहते वह गंगा की ऐसी बाढ़ है कि, लोग आवास के घिरने के पहले उसे छोड़ देते हैं। मुझे 1967 की बाढ से घिरे लंका की समानांतर सडकों के बीच की लंबी पट्टी पर बैठी भीड याद आती हैं, जिसे यह बताने पर भी कि पानी उत्तर गया है --- विश्वास नहीं होता था। तो क्या विश्वस की कमी ही आतंक की खुराक है ?"[16]

ये आतंक छात्रों व्दारा नष्ट हो सकता हैं। रामानंदकहता हैं कि – " -- मुझे खुशी थी कि, मेरे मित्रों ने अपनी चहारदीवारी पूरी तरह ध्वस्त नहीं की हैं। वे बाहर को बाहर ही रहने देना चाहते है। वे अपने अंदरुनी मामलों में आतंकवाद का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करना चाहते, पर इस आतंक का एकमात्र उत्तर सिर्फ इसे वोट व्दारा पराजित करना ही नही है, इस आतंकवाद का सफाया करने के लिए छात्रों को एकजुट होकर आगे आना होगा। पर क्या वे आ सकेंगे?"।[17]

हर एक आतंक से ग्रस्त है। हरिमंगल को आतंकवादियों ने मारा, आरती का पति माथुर है आतंकवादियों को मिला हुआ है। बक्कडगुरु आतंकवादी को शोभना सहयोग देने के लिए मजबूर है। राजनीतिक लोगों पर आतंक का ज्यादा प्रभाव है जो न चाहते हुए भी कुकर्मो में सहायक बनते हैं।

<u>निष्कर्ष</u> :

आतंकवाद का जन्म बहुत पहले से भारत में हुआ है। उसी समय उसका उद्येश्य अन्याय के विरोध में लड़ना था. लेकिन आजादी के बाद संगठित शक्ति के बल पर अवैध कृत्य किये जाने लगे। छात्रों को राजनीतिक नेताओंव्दारा उकसाया गया। देश के संघर्ष में आज का आतंकवाद पनप उठा हैं। भारत और पाक के संघर्ष के कारण देश में आतंकवादी निर्माण हो रहे है। सरकारी अफसरों को मारना, किसी नेता को गोलियों का शिकार बनाना, बंबई जैसे महानगरोंमे गुण्डा लोगों की सहायता से आतंक निर्माण करना। सरकारी कर्मचारियोंपर आतंक दिखाकर कानून को तोडना आदि आतंकवाद के कई दायरे अब हमें देखने को मिल रहे हैं। खून खराबा करना, स्त्रियों की अस्मतको लूटना, आगजनी, लूटपाट करना आदि काम आतंकवादी कर रहे हैं। आतंकवादी प्रवृत्तिपर शिवप्रसाद सिंह ने यहाँ कही उदाहरणों के साथ विचार किया है। शिवप्रसाद सिंह के बक्कडगुरु जैसे अनेक आतंककारी आज बडे–बडे महानगरोंमें निवास करते हैं जिनके कारण पूरा महानगरीय माहौल अशांत बनने जा रहा है।

(11) <u>जातिवाद की समस्या</u> :

भारत में जातीयता के आधारपर ऊँचा-नीचा मानने की परिपाटी है। जातीय, धर्मिक और, सांप्रदायिक संघर्ष हमारे देश में सदियो से चले आये हैं। वर्णाश्रम पध्दतिपर भारत में जातीयता की केरियाँ बनती रही। उदरपूर्ति के लिए चुने हुए व्यवसायों के आधारपर जातियाँ गिनी जाने लगी। इस जातीय भेदाभेदने मानवता के बीच अनेक खाइयाँ पैदा की। भारतीय एकात्मता में खंडितता लाने का प्रयत्न जातिसंस्थाने ही किया हैं। फुले, आंबेडकर और गांधीजी ने जातीय भेदोपभेद को मिटाकर समाज प्रबोधन और राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित करने का प्रयत्न किया।

"गली आगे मुड़ती है", में शिवप्रसादजी ने जातीय संस्था को लचिला बनाये रखने के लिए प्रस्तुत उपन्यास में "आरती और माथूर" का आंतरजातीय विवाह संपन्न कराया हैं। देबू आंतरजातीय विवाह के बारे में कहता है - "मैं इस कोड में अब तुम्हारा साथ नहीं दे सकता नंदू। हम युवजन सभाई अंतर्जातीय विवाह के विरोधी नहीं हैं। जोर जुल्म की बात होती तो हम तुम्हारा साथ देते।"[18] जातीय भेदाभेद राजनीतिक लोगों के लिए एक वरदान ही बन चुका है। हरिजन रज्जो पर जबरी होने पर भी उसे न्याय नहीं मिलता है। वह कहती है - "हम हरिजन हैं, शायद यह समझाने और ठीक से मन में बैठाने के लिए ही लोग हमारे साथ ऐसा सलूक करते हैं। इसकी कोई दवा नहीं हैं। आप समाज की ऐसी शक्तियों के सामने कर भी क्या सकते हैं। सरकार हरिजनों का नाम ले-लेकर अपनी नेकनीयती का मौखिक ऐलान करती रहती है। सहायता देती है, पर समाज यह मानता हैं कि, उसका हक छीनकर हरिजनों की बेढ़ोतरी की जा रही है, इसलिए वह दूसरे तरीकों से बदला लेता हैं। और वह बदला इतना भयावह और खतरनाक होता है कि, मेरी जैसी लडकी सब तरह से अपमानित और जलील होकर भी मुँह सीने के लिए विवश रहती है।[19]

आज के नेता केवल वोटों के लिए उन सहानुभूति दिखाते है, परंतु वास्तव में उनके लिए कुछ भी नहीं करते। राजनेता जातीयता का चुनाव के लिए इस्तेमाल करते हैं। वास्तव में कुछ नहीं करते। छात्र आंदोलन के नेता भी हरिजनों पर भाषण देते है, मगर वास्तव में उनकी समस्या की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। नंदकिशोर इसबात को जान गया हैं, वह कहता है - "ये छात्र नेता मद्रास कैफे और इम्बेसी के बाहर नहीं निकलेंगे। उन्हें इस बात की चिंता नहीं कि, चारों ओर से आनेवाले छात्रों की समस्या क्या है। हरिजनों पर भाषण सब देंगे नक़ली सहानुभूति की कमी नहीं है, पर मौके पर कोई खडा नहीं होता है।"[20]

निष्कर्ष :

आज भी जातीयता और धार्मिकता के नाम पर बडे-बडे दंगे फसाद हो रहे हैं। सवर्ण-दलित हिंदू-मुस्लिम के बीच सदैव फसाद होते जा रहे है। राममंदिर-बाबरी-मसजिद तथा बंबई बम विस्फोट के मसले इसके अच्छे उदाहरण हो सकते हैं। जातीय भेदाभेद के कारण दलित स्त्रियोंपर अत्याचार हो रहे हैं। हरिजन रज्जो इसका अच्छा उदाहरण हैं। यह गंभीर समस्या देशवासियों को जोडने की अपेक्षा तोडती जा रही हैं। इसका फ़ायदा बाय शक्तियाँ उठाकर देश में अराजकता फैला रही है। सभी इन्सानों का खून एक ही है, जातीय भेदाभेद एक आडम्बर हैं, यह भावना जब हर एक के मन में पैदा होगी तब, धार्मिक और जातीय भेदाभेद की खाइयाँ कम होगी। मानवता की प्रतिष्ठापना होगी। उपन्यासकार शिवप्रसादसिंहजीने इस समस्या को स्पर्श करके दलितों की स्थिति और गति पर प्रकाश डाला है।

"गली आगे मुड़ती है" में चित्रित समस्याएँ : निष्कर्ष :

शिवप्रसाद सिंहजी का उपन्यास "गली आगे मुड़ती हैं" में धार्मिक आडंबर की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, -गुंडई की समस्या, बाढ की समस्या, हिंदी भाषा आंदोलन की समस्या, पुलिस कर्मचारियों के भ्रष्टाचार की समस्या, ग्राहकों को ढगाने की समस्या, अश्लिलता की समस्या, आतंकवाद की समस्या, जातीयवाद की समस्या आदि समस्याएँ देखने को मिलती हैं। ये समस्याएँ गहराई के रुप में इस उपन्यास में चित्रित नहीं हो पायी हैं, कारण सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करना सामाजिक समस्याओं के माध्यम से समाज की भलाईयाँ-बुराईयाँ दिखाना इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य नहीं हैं। इस उपन्यास का प्रमुख उद्येश्य युवा आक्रोश की नाना शक्लें, युवा शक्ति की उर्जा तथा पस्त होती हुओ मानसिकता पर सोचना है। रामानंद तिवारी की आत्मभिरुता के माध्यम से लेखक ने अपने उद्देश्य की पूर्ति करने का काम सफलता के साथ किया है। यह प्रमुख उद्देश्य प्रस्तुत करते समय काशी जैसे सांस्कृतिक क्षेत्र में समाज की ज्यो-ज्यो समस्याएँ देखने को मिलती हैं, उसपर ऊपरी सतहसे सोचने का काम उपन्यासकार ने किया है।

लेखक ने इन समस्याओं के माध्यम से अपनी सामाजिक प्रतिबध्दता का परिचय देकर धार्मिक क्षेत्र में आडंबर की प्रवृत्ति, भ्रष्टाचार की दयनीय स्थिति, बेरोजगारी से अजीज आयी युवाशक्ति, इससे निर्मित गुंडई, बाढ जैसे प्राकृतिक प्रकोप में छात्र-युवा-शक्ति की सहाय करने की

प्रवृत्ति देशी भाषा के प्रति युवको का प्रेम, भ्रष्टाचारी माहौल के खिलाफ आक्रोश, ढगाने की प्रवृत्ति के बारे में खीज तथा निराशा, कुंठा से ग्रस्त युवा शक्ति में आतंकवादी प्रवृत्ति का निर्माण, जातीयवादी प्रवृत्ति के खिलाफ क्रोध, आदिको दिखाकर लेखक ने काशी जैसे सांस्कृतिक शहर में भी अवैध कारनामें कैसे निरंतर चलते हैं, इसपर भी दृष्टिक्षेप किया है।

इस उपन्यास मे चित्रित सामाजिक समस्याएँ लेखक की समाज के प्रति प्रतिबध्दता और जुडाव को सिध्द करती हैं। समस्याएँ संकेतमात्र होकर भी उसमें गहरी चुभन है। इससे लेखक का धार्मिकता के प्रति प्रेम नजर आता है। यहाँ लेखक ने अपने समय के सामाजिक बदलावों को अंतरजातीय विवाह के माध्यम से चित्रित किया है। जातीय भेदा भेद की समस्या में विषमताओं और विसंगतियों का अच्छा चित्र खिंचा है। हरिजन रज्जो का कथन इसका अच्छा उदाहरण हो सकता है। लेखकीय चेतना काशी–क्षेत्र के सामाजिक बदलाओं पर भी प्रकाश डालती है। इस समस्याओं के चित्रण में लेखक की अनुभूति की विस्तृतता देखने को मिलती है। लेखक ने यहाँ सामाजिक समस्याओं का मूल्यांकन सफलता के साथ किया है। साथ ही मनुष्य के व्यापक संकट की चर्चा, मनुष्य की वर्तमान स्थिति एवं गति छात्र–जीवन की पस्त होनेवाली मानसिकता आदि के रुप में वर्तमान स्थितियों पर चिंता व्यक्त की है। उपन्यासकारने प्रस्तुत आलोच्य उपन्यास में केवल समस्याओंका चित्रांकन न करके इन समस्याओंका हल ढूँढने का भी प्रयत्न सफलताके साथ किया है। इन समस्याओंके माध्यम से शिवप्रसादजीने काशी अंचल की समाजस्थिति तथा समाजगति को सफलता के साथ चित्रांकित किया है।

संदर्भ सूची

1) डॉ.वाय्.बी.धुमाळ – "साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृतिमूलक तुलनात्मक अध्ययन, (1960–1980), अप्रकाशित शोधप्रबंध, पुणे विश्वविद्यालय 1985 पृ.76.

2) शिवप्रसाद सिंह "गली आगे मुड़ती हैं" राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज नवी दिल्ली, द्वि.सं. 1991 पृ. 50

3) वही पृ. 48

4) वही पृ. 60

5) वही पृ.60

6) डॉ.सिताराम अकिंचन "युवजन समस्या एवं समाधान" ज्योति प्रकाशन रॉंची, सं. 1992 पृ. 36

7) श्रीकांत वर्मा "वीसवी शताब्दी के अँधेरे में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1982 पृ. 30

8) डॉ.पी.के. पद्मजा "हिंदी उपन्यास साहीत्यकार वैचारिक आंदोलन का प्रभाव" पंकज पब्लिकेशन गढ दिल्ली, प्र.सं. 1986 पृ. 80

9) शिवप्रसाद सिंह "गली आगे मुड़ती हैं", राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नवी दिल्ली, द्वि.सं. 1991 पृ.79

10) वही पृ. 116–117

11) वही पृ. 118

12) वही पृ. 118

13) वही पृ. 128

14) वही पृ. 163

15) वही पृ.186

16) वही पृ. 275

17) वही पृ. 275

18) वही पृ. 228

19) वही पृ. 289–290

20) वही पृ.181